म्युज़ियम या प्रदर्शनी आद खुलती है तो चित्र वहां रखे ही हुए है । पहले किस चित्र पर ले जाते है। पहले तो दो बाप का परिचय देना पड़ता है। बाप किसको कहा जाता है। मनुष्यो को या देवताओं को भगवान तो कहा ही नही जाता । बाकी रहा निराकार शिव। जिसको भगवान भी कहा जाता है। तथा शिव बाबा भी कहा जाता है। त्रिमूर्ती तो है ही। गायन भी है कि बाप ब्रह्मा के दवारा ही स्थापना करते है विष्णु की पुरी राजधानी है। अब खुद तो स्वर्ग का मालिक नही बनते है। निराकार परमात्मा विष्णु पुरी का मालिक नही है। ब्रह्मा के दवारा ही विष्णु (ल० ना०) की राजधानी की स्थापना करते है। वह ल० ना० ही ब्रह्मा और सरस्वती या वह ब्रह्मण कुल भूषण चोटी स्थापना करते है। वो तो नई दुनियां स्वर्ग हो गई ना। बाकी तो सब ही धर्म खलास हो जाते है। विष्णु पुरी में तो और कोई भी धर्म होता ही नही है। इस समय तो सब है पतित। विष्णु पुरी ही है पावन। यह भी तो पतित मनुष्य है। बाप ही पतितो को पावन बनाने वाला है। बाप ने बहुत ही जनमो के अन्त में आकर प्रवेश किया है। यह पतित है फिर योग बल से ही पावन बनते है। योग बल से ही राजाई प्राप्त होती है पहले परिचय बाप का फिर त्रिमूर्ती का फिर गोले में संगम दिखाना पड़े। सतयुग में थोड़े और कलियुग में बहुत होते है। कहा है ही एक राजा भारत वासी चाहते है ना कहा रखता हो। तथा ऐक ही राज्य हो। एक ही मत हो। सतयुग में एक ही राज्य होता है। और पवित्रता भी है अनेको के विनाश के लिये तैयारी हो रही है। शिव बाबा नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश करते है। भारत का उत्थान और पतन सबको ही समझाया जाता है। सतयुग में भारत सतोप्रधान था। अब तो तमो प्रधान बना है। फिर योग बल से सतोप्रधान बन जाते है। और कोई भी मनुष्य राजयोग सिखला नही सके सीढ़ी का भी समझाया है। सूर्य वंशी राज्य और चंद्र वंशी राज्य। अब है शूद्र वंशी राज्य। अब तो बाप राजयोग सिखा रहे है ना। अगर तुम कहेगे कि पवित्र बनना है, इनसे वहत करते है ना ... ही कहते है कि देवताओ को भी तो बच्चे थे ना। इस बात पर नही । पहले तो टेम्पटेशन। बाप स्वर्ग का रचियता है। तुम स्वर्ग के मालिक थे। तमो प्रधान से अब फिर सतोप्रधान बनना है। पवित्रता की बात से डर जाते है। झगड़ा विघन आद सब इस पवित्रता पर ही होते है। समझाना चाहिये कि यह राजयोग तो कोई सन्यासी आद सिखा नही सकते है। जब भी कोई को समझाया जाता है तो आत्मा ही समझ कर सुनाना है। देखना है उनको समझ में आता है और समझ कर बोलता है खुशी होती है। अगर तो उल्टा सुल्टा प्रश्न आद करते है तो छोड़ ही देना चाहिये । जब तक बाप का नही समझा है तो तब तक आगे नही बड़ना चाहिये ऐसे ही थोड़ा या समझा कर रवाना कर देना चाहिये । बाप रचता है ना। आये वर्सा देते है। पहले तो नब्ज़ देखना चाहिये। समझाओ तो भी आत्मा ही देखना है। हम अपने भाई को समझाते है ऐसे ही समझाना चाहिये। बाप कहते है कि मामेकम याद करो। बाप तो है ही ऊंच ते ऊंच। इनको ही याद करने से अन्त मते सो गते हो जावेगे। ऐसे ऐसे समझाना है। ऐसे मत समझो कि फायदा कुछ नही होता है। प्रजा भी तो बननी है ना। पवित्र ना रहेगे तो भी अन्त में सजाये खाकर ही स्वर्ग में जावेगे। इतने सब पवित्र थोड़ा ही बनते है। ज्ञान सुनने से भी काफी फायदा होता है। पवित्र होकर फिर गिर पड़ते है। यह कोई नई बात नही है। बाप तो कहते है कि मैं तो हर 5000 वर्ष के बाद ही आता हू। हम तो स्टूडेन्टस है तो भी पढ़ाने वाला टीचर तो याद आवेगा ना। पढ़ते हो ना। शिव बाबा याद पढ़े। ऊंच ते ऊंच गुरु भी है ना। वो ही ज्ञान का सागर भी है। भक्ति और ज्ञान का फर्क समझाना चाहिये। ज्ञान सागर दवारा ही ज्ञान की सदगति होती है। वो ज्ञान का सागर तो एक ही है। मनुष्य को कब भी ज्ञान का सागर पतित पावन और प्यार का सागर कहा नही जाता है। भल अपने को जगत गुरु कह देते है। किन्तु ज्ञान का सागर नही कहेगे। वो तो लोग है शास्त्रो की अथार्टी। ज्ञान के नही है। ऋषि मुनी आद तो सब नेती नेती ही करते गये है। हम रचता और रचना को नही जानते है। बाप तो आते ही कल्प के संगम युग पर। युग युग थोड़ा ही आकर

गोता सुनावेगे। वा राजयोग सिखलावेगे। बाप कहते है कि मैं तो संगम युगे ही आता हू। सतगुरु तो एक ही है जो तो आता ही है संगम युग पर। तो पुरुषोतम बनना है ना। वो तो सीड़ी उतरते ही आते है ना। तो वो पुरुषोतम बन ही कैसे सक्ते है। मनुष्य तो है बिलकुल ही तमोप्रधान बुधि। सतोप्रधान बनने मे टाईम लगता है भूल बात तो है ही कि देह के सभी धर्मो को छोड़ कर अपने को आत्मा समझो और बाप को ही याद करना है। बाप पुआईन्टस तो सुनाते ही रहते है। जैसा जैसा मनुष्य ऐसा ऐसा ही उनको मिठाई भी खिलानी चाहिये समझो कि बच्चे= जो कुछ भी हुआ ड्रामा मे सब कुछ ऐसा था। पास्ट की ज़रा भी फिक्रात नही है। रात हो तो समझना चाहिये कि जो भी हुआ सो कल्प पहले के मिसल हीः पास्ट हुआ है। पिछाड़ी की चिन्ता नही करनी चाहिये ड्रामा मे ही जो कुछ थासो हुआ। भूल हुई फिर कल्प बाद मे भी होगी। आगे के लिये अभुल बनना है। कर्मातीत अवस्था वाले को ही अभुल कहा जाता है। अभी तो कोई भी अभुल बन ना सके। कर्मातीत अवस्था तो पिछाड़ी में ही होगी। जब कि रिज़ल्ट भी होनी है। तब ही कर्मेन्द्रियां भी तो वश मे हो जाती है। चंचलता नही करेगी। आत्मा को याद करेगे तो फिर कोई भी शारिरक भान वा बुरी दृष्टि नही रखेगे। ऐसी ऐसी पुआईन्टस तो बुधि मे धारण करनी है। बाप तो बैठे ही है। कह देते है कि सबकुछ ठीक ही चल रहा है ना। बाबा बैठा बाबा तो सब ही बातो को जानते है ना। बाप की कितनी महिमा है। सुख का सागर पवित्रता का सागर है। तो वो नो सब ही खुबीया सिखलाने आते है ना। तुम लायक बन रहे हो। बाप ही आकर लायक बनाते है। बाप कहते है कि तुम बच्चे अब= मूर्ख बन गये हो। पतितो को पावन बनाने वाला तो ऐक ही बाप है। तुम सब है सीताये। एक ही है राम। सब सीताओं को और भातो पावन बनाते है। बाप कैसे पढ़ाते खिलाते और सुलाते है। तुम बच्चो को निश्चय भी है कि स्थापना तो होनी ही है। ड्रामा का तो प्लैन ही है कि पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनियां की स्थापना तो होनी ही है यह ही प्लैन है। वो लोग तो कितना ही कर्ज़ आद लेते है। यहा तो वो बात ही नही है। सारा ही ड्रामा का प्लैन है ना। अच्छा मीठे मीठे रुहानी बच्चो को रुहानी बाप वा दादा का याद प्यार और गुड नाईट।

-12-67 रात्री क्लास बाप का परिचय तो बच्चे देते है। बेहद के बाप का वर्सा तो यह वर्सा पावेगे। वर्सा तो शिव बाबा का ही है ना। यह तो सब ही जानते है। ब्रह्मा तो है ट्रस्टी। शिव बाबा ही है दाता। भक्ति मार्ग मे भी शिव बाबा ही दाता है। भगवान के अर्थ जो कुछ भी करते है सो दान आद ही करते है। दूसरे ही जन्म मे अल्प काल के लिये ही सुख मिलता है। वो है इनडोरेक्ट यह फिर डोरेक्ट है। शिव बाबा 21 जन्मो के लिये ही देते है। कोई की भी बुधि मे यह आवे कि मै शिव बाबा को देता हू सो फिर इनसल्ट हो जाती है। देते ही है लेनें के लिये। यह है शिव बाबा का भंडारा। काल कंटक आद तो सब दूर हो जाते है। बाप के पास बच्चे पढ़ते ही है अमर लोक मे जाने के लिये। अमर लोक वा नई दुनियां मे काल आता ही नही है। सतयुग मे तो गुरु का नाम ही नही होता है। भक्ति मार्ग मे गुरु होते है। बाप कहते है कि मै तुमको कांटो से फिर फूल बनाता हू। यह समय भी है कांटो से फूल बनने का। यह है ही कांटो का जंगल। वो है फूलों का बगीचा। यहा तो एक दो को काटें ही लगाते रहते है। ब्र० कु० बनने से बहन भाई बन जाते है। आत्माये तो सब है ही भाई भाई। फिर प्रजा पिता ब्रह्मा के बच्चे भाई बहन हो जाते है ना। यह भी तो भगवान के बच्चे बहन भाई तो ठहरे ना। भगवान के बच्चो को विश्व की बादशाही चाहिये ना। थी अब फिर बाप देते है। बड़ी ही जबर्दस्त की कमाई है। भारत का योग बल तो बहुत ही नामी ग्रामी है। सन्यासी आद बहुत विलायत मे जाये उन्हो को सन्यासी लेते है। सन्यासी तो राजयोग को जानते ही नही। उनका है हद का सन्यास। यह है बेहद का सन्यास। अब तुम्हारी तो बुधि मे है कि हम आत्मा है। आत्मा को बाप और वर्सा ही याद है। जिसको मन मना भव और मध्या जी भव भी कहा जाता है। तुम जानते हो कि पुरानी दुनिया तो खत्म हो होनी है। बेहद के बाप से विश्व की बादशाही 5000 वर्ष पहले मिली थी अब